उत्तर वैदिक काल का इतिहास

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

उत्तर वैदिक काल के इतिहास के बारे में जानकारी के स्त्रोत क्या है

ऋग्वैदिक काल (1500BC – 1000BC) में निरन्तरता एवं परिवर्तन के फलस्वरूप उत्तर वैदिक काल का विकास हुआ| 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक के काल को उत्तर वैदिक काल कहा जाता है| इस काल की जानकारी हमें सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद के आलावा ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद जैसे सहायक ग्रंथों से प्राप्त होती है|

1. सामवेद - यह गायन से संबंधित रचना है. इसका संकलन यज्ञों के दौरान गीत गाने के उद्देश्य से किया गया है. भारतीय संगीत की उत्पत्ति इसी से मानी जाती है क्योंकि इसमें अलाप, गायन, वाद्ययंत्र आदि की सर्वप्रथम चर्चा है. मूलतः यह ऋग्वेद के छन्दों को लेकर लिखा गया है. इसमें केवल 75 छंद नये है.

2. यजुर्वेद - यह कर्मकांडो का संकलन है. इसमें यज्ञ एवं बलि के दौरान किये जाने वाले विभिन्न विधि विधान का उल्लेख है. यह एकमात्र वेद है जो गद्य एवं पद्य दोनों में है. इसे दो भागों में बांटा जाता है. पहला शुक्ल यजुर्वेद तथा दूसरा कृष्ण यजुर्वेद.

3. अथर्ववेद- यह आम लोगों से संबंधित रचना है. इसमें तंत्र-मंत्र, वशीकरण, अंधविश्वास, जादू-टोना आदि का उल्लेख है इसमें रोगों के उपचार की विधियों, आयुर्वेद आदि की भी चर्चा है. भारतीय चिकित्सा शास्त्र की उत्पत्ति अथर्ववेद से ही मानी जाती है.

नोट: प्रथम तीन वेदों ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद को वैदिक त्रयी कहा जाता है| इसमें अथर्ववेद की गणना नहीं की जाती है|

4. ब्राह्मण ग्रन्थ- यह कर्मकांडो का संकलन है. इनसे वैदिकों के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक पक्षों पर भी प्रकाश पड़ता है.

5. आरण्यक - यह वेदों के रहस्य एवं चिंतन से जुड़े ग्रन्थ है. इन्हें ब्राह्मणों तथा उपनिषदों के बीच की कड़ी माना जाता है.

6. उपनिषद - इन्हें वेदांत भी कहा जाता है. यह वेदों के दर्शन से संबंधित ग्रन्थ है. उपनिषदों में कर्मकांडो की निंदा की गई है तथा ज्ञान मार्ग पर बल दिया गया है. उपनिषदों का अर्थ है 'गुरु के समीप बैठकर ज्ञान लेना'|